भगत रविदास – सबद १४

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥

रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५७

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥१॥
माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥
जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥१॥ रहाउ ॥
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥२॥
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥
सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई ॥
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥

सार: जब स्वयं को ज़्यादा अहमियत दी जाती है तब हम व्यापक यथार्थ से जुड़ने का अवसर खो देते हैं। 'मैं' और 'तुम' की समस्या तब पैदा होती हैं जब अलगाव हमारी मुख्य पहचान बन जाता है। 'मैं' एक रक्षित इलाका बनता है जबकि 'तुम' बाहरी या पराया बन जाता है। तब संघर्ष अनिवार्य-सा लगने लगता है मानो विभाजन ही स्वाभाविक स्थिति हो। इस अवस्था में सामंजस्य के स्थान पर तुलना आ जाती है और सत्य की खोज से अधिक महत्त्व आत्म-छवि को दिया जाने लगता है। जब 'मैं' होता है तब मैं 'तुम' को नहीं देख पाता, जब मैं 'तुम' को मानता हूँ तब मैं अपनी 'मैं' को भूल जाता हूँ। एक ज्ञानपूर्ण नज़रिया 'मैं' और 'तुम' को ज़िंदगी के व्यवहारिक पक्ष मानता है लेकिन उन्हें हमारी चेतना पर हावी नहीं होने देता। जैसे-जैसे यह गहरी समझ विकसित होती है, अहंकार से भरा 'मैं' कम होता जाता है और 'हम' उभरने लगता है जो चेतना को एक व्यापक एकत्व की ओर ले जाता है।

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
जब 'मैं' हावी होता है तब 'तुम' नहीं रहता है और जब 'तुम' रहता है तब 'मैं' मौजूद नहीं रहता। यह बताता है कि पृथक पहचान का आग्रह एकत्व की अनुभूति को छिपा देता है।

अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥१॥
जैसे विशाल समुद्र में उठती लहरें हैं, वह अंततः जल के अंदर जल ही होती हैं। यह दिखाता है कि प्रकृति के विभिन्न रूप अलग-अलग दिख सकते हैं लेकिन वह सभी उसी सार्वभौमिक स्रोत से उत्पन्न होते हैं जो सबको जोड़ता है। (१)

माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥
हे प्रिय चेतना, इस स्थिति को भ्रम कैसे कहा जा सकता है? यह धोखे की विरोधाभासी प्रकृति को उजागर करता है जिससे अवास्तविक, वास्तविक जैसा लगता है।

जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥१॥ रहाउ ॥
जो सच जैसा माना जाता है या समझा जाता है, वह वैसा नहीं होता जैसा दिखता है। यह उस बौद्धिक भ्रांति को उजागर करता है जिसमें हम दिखावे को वास्तविकता समझ लेते हैं और अंतर्निहित सत्य को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। (१)(विराम)

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥
एक राजा सिंहासन पर सोता है और भिखारी बनने का सपना देखता है। यह छवि दिखाती है कि हमारी पहचान की भावना हमारी धारणाओं के आधार पर कैसे बदल सकती है।

अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥२॥
हालांकि उसका राज्य सुरक्षित रहते हुए भी, उसने सपने में अलगाव का गहरा दुःख अनुभव किया। यह हमारे अपनी पीड़ा के अनुभव को दर्शाता है जहाँ पीड़ा अक्सर वास्तविक हानि से नहीं बल्कि भ्रम, भय और गलत पहचान से उपजती है। (२)

राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥
यह राज्य, उस कहानी की याद दिलाता है जिसमें रस्सी को सांप समझ लिया जाता है और अब यह मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। भ्रम के आरोपण को यह दर्शाता है और बताता है कि समझ का प्रकाश धारणा को बदल सकता है।

अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥
जैसे अनेक कंगनों में से मूल कंगन को भूल जाने पर उसकी पहचान ही खो जाती है। यह बताता है कि सामाजिक प्रभावों और सतही समानताओं के बीच हमारी अखंडता के बारे में आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है जो हमारी धारणाओं को धूमिल कर सकती हैं। (३)

सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई ॥
एक ही सर्वव्यापी शक्ति, सभी में कई रूपों में प्रकट होती है। सर्वव्यापी स्वामी, अपनी उपस्थिति से, प्रत्येक देह में जीवन का अनुभव करता है। यह विचार विविधता के रूप में व्यक्त एकता पर ज़ोर देता है जो सर्वेश्वरवाद के दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि सार्वभौमिक चेतना ही हर जीव के अस्तित्व में अनुभव के तौर पर व्याप्त है।

कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥
रविदास कहते हैं कि सर्वव्यापी ऊर्जा हाथ से भी ज़्यादा क़रीब है और प्राकृतिक सहज शांति की अवस्था में इसका अनुभव होता है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि परम सत्य कहीं दूर नहीं है बल्कि यह हमारे भीतर, हमारे अस्तित्व से गहराई से जुड़ा हुआ है। (४)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास परम सत्य के लिए बाहरी दिखावे को समझने की आम प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हैं। जब हम दिखावे को सच्चाई समझ लेते हैं तब हम स्थापित सांस्कारिक कहानियों में सतही पहलुओं पर प्रतिक्रिया करते हैं। हम उसमें लीन हो जाते हैं जिसे हमारा अहं, सच, स्थिति, भूमिका, सफलता और हमारे विचारों के रूप में प्रस्तुत करता है जो सफलता और विफलता, योग्य और अयोग्य होने

की भावना पैदा करते हैं। इस कोलाहल में, हम अक्सर इन सबके नीचे छिपे गहन सत्य को भूल जाते हैं, वह स्थिर जागरूकता जो सब कुछ देखती है। भक्त रविदास हमें यह पहचानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि यद्यपि सतहें मौजूद रहती हैं फिर भी उनके प्रभाव से ऊपर उठकर एकत्व का बोध कर पाना संभव है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com